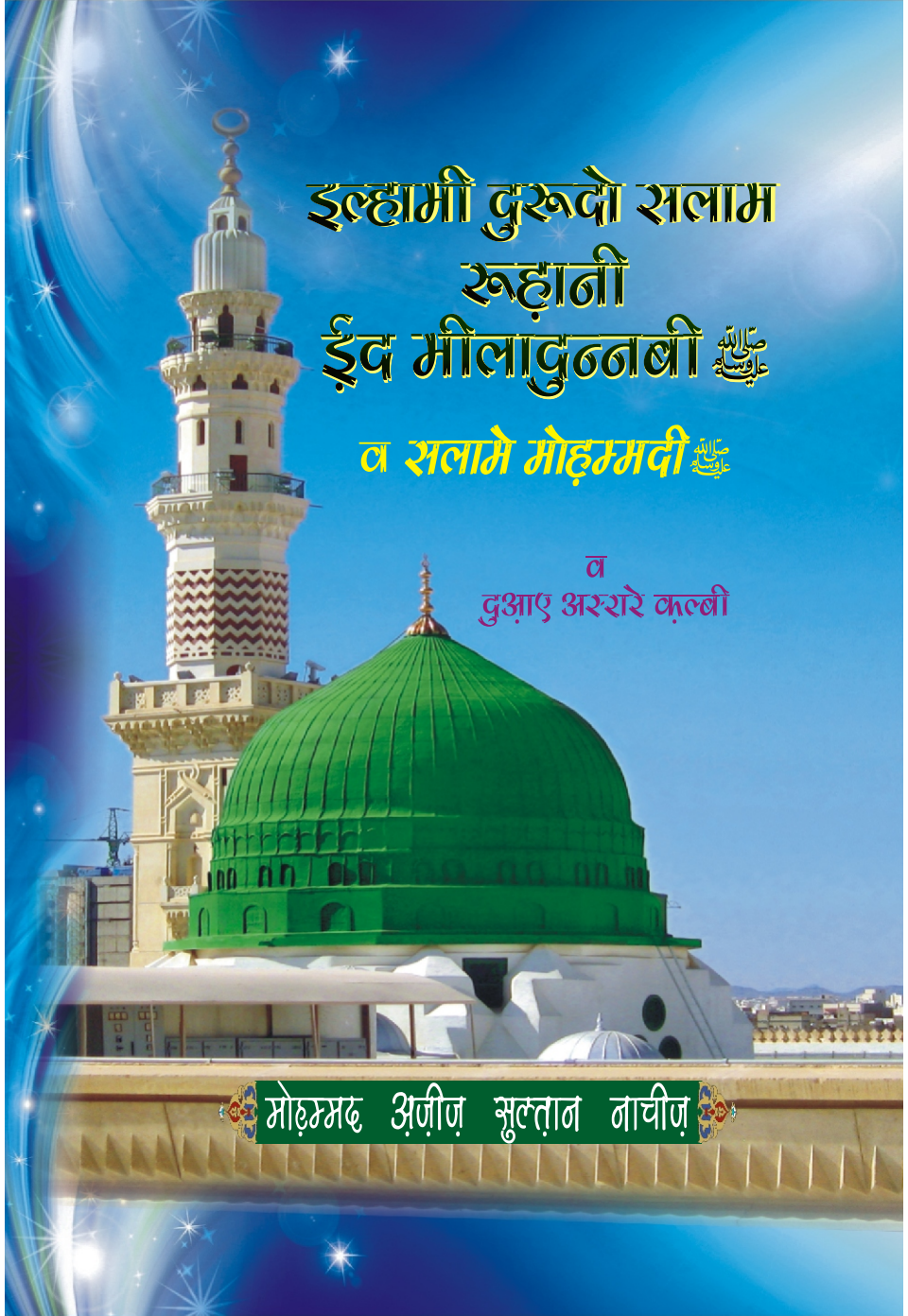

इल्हामी दुरूदो सलाम रूहानी ईद मीलादुन्नबी ﷺ

व सलामे मोहम्मदी ﷺ

व

दुआए अस्रारे क़ल्बी

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

786/92

इल्हामी दुरूदो सलाम

रूहानी ईद मीलादुन्नबी ﷺ

۷۸۶/۹۲

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

ص م ح م د صلی اللہ علیہ وسلم

ص ح م د م صلی اللہ علیہ وسلم

ص م د م ح صلی اللہ علیہ وسلم

ص د م ح م صلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاء اللہ

सलामे मोह़म्मदी ﷺ

चहल मीम ग़ैर मन्कूत़ 13

व

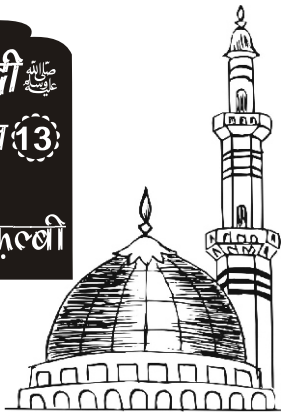

दुआए अस्रारे क़ल्बी

पेशकश

बमौक़ा रबीउ़ल्अव्वल 1438हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व ह़ज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

अ़र्ज़े मुतर्जिम

नह़ मदुहू व नुसल्ली व नुसल्लिमु अ़ला रसूलिहिल करीमि सय्यिदिल आ़लमी न मुह़म्मदिवँ व आलिही अज्मई़न ।

पेशे नज़र किताब"स़लातु बशाइरिल ख़ैराति अ़लन्नबिय्यि ﷺ" नूरे मुस्त़फ़ा ﷺ व नुरे नज़रे अहले बैत सय्यिदी व मुर्शिदी रूह़ी व क़ल्बी बाज़े अश्हब मुह़युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदि़यल्लाहु अ़न्हु की त़स्नीफ़े लत़ीफ़ है इस किताब को हमारे सरकार ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु ने ज़ालि क फ़दलुल्लाहि युअतीहि मँय्यशाउ के फ़ज़्लो अ़त़ीयए रब्बानी में शराबोर हो कर वत्तबिअ़ मा यूह़ा इलै क की इत्तेबाअ़ करते हुए व मँय्युअ तल ह़िक्म त फ़

क़द ऊति य ख़ैरन कसीरन के बह़रे ख़ैरो ह़िक्मत से व अ़ल्लमनाहु मिल्लदुन्ना इ़ल्मन के मक़ामे तिल्मीज़ुर्रह़मान पर फ़ाएज़ हो कर नून वल क़ लमि वमा यस्तुरू न के नूरानी क़लम से रक़्म फ़रमाया है इस दुरूद का हर ह़र्फ़ो कल्मा नूरो ह़िक्मत के ख़ज़ाएने रूह़ानिया व अस्रारे ग़ैबिया व मुशाहदाते क़ल्बिया के समुन्दर से लबा लब है जो तश्नगाने रूह़ानियत के लिए आबे कौसर,मुर्दा दिलों के लिए आबे ह़यात,अज़्दहाए नफ़्सानियत के डसे हुओं के लिए तिर्याक़ और ग़म्ज़दों व दुख के मारों के लिए सकीनए रूह़ानिया है,नीज़ गुनहगारों के लिए व यग़ फ़िर ल कुम का मुज़्दा है और ख़ल्क़े ख़ुदा के लिए हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम मिनल हुदा का नूरे सिराते मुस्तक़ीम है यह दुरूद इल्हामी है जिसे सय्यिदी हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु

अ़न्हु ने अल्लाह तआ़ला से इल्हाम के वास्ते से ह़ासिल फ़रमाया और इसे अपने जद्दे अम्जद नबी करीम ﷺ की बारगाहे अक़्दस में पेश फ़रमाया तो आक़ा ﷺ ने ख़ुद इस दरूद की फ़ज़ीलत ब्यान फ़रमाई जैसा की इस दुरूद के फ़ज़ाएल में जुम्ला तफ़सीलात मौजूद हैं,यह दुरूद सय्यिदी हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु के मख़्सूस ख़ुल्फ़ा व मुरीदीन के मअ़मूल में रहा है, फ़िल ह़ाल उम्मते मुह़म्मदिया ﷺ को आ़म तौ़र से इस दुरूद की बरकतों से माला माल होने के लिए ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम की दस्तगीरी से अ़रबी दुरूद का तर्जमा करने की इस आ़जिज़ व कम्तर को तौफ़ीक़ म रह़मत हुई अल्लाह इसे अपने ह़बीब ﷺ और अहले बैत केराम और सय्यिदी हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हुम के

वास्ते से क़बूल फ़रमाए और इस दुरूद को उम्मते मुहम्मदिया ﷺ के हर ख़ास़ो आ़म को पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और सय्यिदी हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु की दस्तगीरी से दाइमी त़ौर पर माला माल फ़रमाए आमीन बिजाहे सय्यिदिल मुर्सलीन वल ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन व स़ल्लल्लाहु अ़ला ह़बीबिही सय्यिदी मुह़म्मदिवँ व आलिही व स़ह़बिही अज्मई़न बि अ़ द दि इ़ल्मिश शैख़ि अ़ब्दिल क़ादिरल जीलानिय्यि।

जारूब कश
ब आस्तानए आ़लिया
ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ
रदि़यल्लाहु अ़न्हुम
मौलाना मुफ़्ती
मोह़म्मद ह़ामिद रज़ा सुल्त़ानी
9695435877

स़लातु बशाइरिल ख़ैराति अ़लन्नबिय्यिﷺ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

हाज़िही "स़लातु बशाइरिल ख़ैराति अ़लन्नबिय्यिﷺ" तालीफ़ु इमामिल अइम्मति अश्शैख़ि अ़ब्दिल क़ादिरिल जीलानीयि न फ़ अ़ नल्लाहु बि ब र क तिही आमीन

व स़ल्लल्लाहु अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिवँﷺ व अ़ला आलिही व स़ह़बिही व सल्ल म

अल्ह़म्दुलिल्ला हिल्लज़ी मन्न अ़लैना बिनिअ़मतिल ईमानि वल इस्लामि क़ा ल इमामुल अइम्मति व शैख़ुल उम्मति सय्यिदुल अन्जाबि व क़ुत्बुल अक़्ताबिल ग़ौसुल अ़ज़ीमु अस्सय्यिदु अ़ब्दुल क़ादिरिल जिलानीयि लि बअ़दि इख़्वानिही फ़िद्दीनिः ख़ुज़ू मिन्नी हाज़िहिस़्सला त फ़ इन्नी क़द अख़ज़्तुहा बिइल्हामिम्मिनल्लहि अ़ज़्ज़ व जल्ल सुम्म अरत्तुहा अ़ लन्नबिय्यि व अरत्तु अन अस अ ल हू अ़न सवा बिहा फ़ अख़्ब

रनी क़ब्ल अन अस्अ लहू फ़ का ल ली लहा मिनल फ़दलि शैउन ग़रीबुन ला यन्हसिरु फ़ इन्नहा तर फ़ उ अस्हा बहा इला अअ लद्द र जाति व इज़ा क़ स द अम्रन ला यख़ीबु ज़न्नुहू व ला तुरद्दु लहू दअ वतुन इन्दल्लाहि व मन क़ र अ हा मर्रतवँ वाहि द तन ग़ फ़ रल्लाहु लहू व लिमन फ़िल मज्लिसि व इन ह़ द़ ऱ, अ ज लुहू इन्दल मौति ह़ द़ र इन्दहू अर ब अ तुम्मिनल मलाइ कति।

अल अव्वलुः यम्नउ़श्शैत़ा न वस्सानीः युलज़िमुहू कलि म त यिश्शहादति वस्सालिसुः यस्क़ीहि बि कअसिम्मिनल कौसरि वर्राबिउ़ः बियदिही त़ा स तुम्मिनज़्ज़ हबि ममलू अतुम्मिन सिमारिल जन्नति व य कूलुल्लाहु लहू अबशिर या अ़ब्दल्लाहि उन्जुर ल क मन्ज़िलन फ़िल जन्नति फ़ यन्जुरु फ़ यराहु बिऐनैहि क़ब्ल अन तख़ुज रूहुहू व यदख़ुलल्जन्न त व फ़ी क़ब्रिही आमिनन व ला यरा फ़ीहि वह़शतवँ व ला द़ीक़न व युफ़्तहु लहू अर बऊ़ न बाबम्मिनर्रह़मति व

युअ़ल्लकु अ़ला रअसिही क़िनदीलुम मिनन्नूरि युब्अ़सु बिही यौमल क़ियामति व अ़ँय्यमीनिही म ल कुन युबशशिरुहू व अ़न शिमालिही म ल कुन युअम्मिनुहू व अ़लैहि हुल्लतानि व युहदा लहू नजीबुम्मिनल जन्नति यर क बु अ़लैहि व ला यरा ह़स्रतवँ व ला नदामतवँ व ला युह़ासबु बिसूइल अ़ म लि व इज़ा मर्र अ़लस़्सिराति फ़ तकूलु लहुन्नारु जुज़ सरीअ़न या अ़तीक़ल्लाहि इन्ननी मुह़र्रमतुन अ़लै क वदख़ुलिल्जन्न त मिन अय्यि बाबिन तशाउ कुल्लु ज़ालि क फ़िल जन्नति युअ़ता इलैहि, व लिकुल्लि बाबिन अर बऊ़ न कुब्बतम मिनल फ़िद्दति, फ़ी कुल्लि कुब्बतिम मि अ तु ख़ै मतिम मिनन्नूरि, फ़ी कुल्लि ख़ै मतिन सरीरुम मिनल काफ़ूरि, अ़ला कुल्लि सरीरिन फ़िराशुम मिनस्सुनदुसि, अ़ला कुल्लि फ़िराशिन जारियतुम मिनल हूरिल ईनि ख़ ल क़ हल्लाहु मिनत़्तीबिल मुत़य्यबि क अन्नहल बदरु लै ल तत्तमामि सुम्म युअ़त़ीहिल्लाहु माला ऐनुन र अत व ला उज़ुनुन समिअ़त व ला ख़

त़ र अ़ला क़ल्बि ब श रिन व फ़िल ख़ ब रि
अ़निन्नबीयि लै ल तन उस्रि य बिही इला ह़द़ र
ति रब्बिही फ़ क़ालल्लाहु अ़ज़्ज़ व जल्ल व
अ़लाः अस्समावातु लिमन या मुह़म्मदुﷺफ़ क़ा
ल लहू ल क या रब्बु, फ़ क़ा ल लहू अन्त
लिमन या मुह़म्मदुﷺ फ़ क़ा ल लहू ल क या
रब्बु,फ़ क़ा ल ल हू अना लिमन या
मुह़म्मदुﷺफ़ स क तन्नबिय्यु व म न अ़ हुल
ह़याउ अँय्यकू ल लहू शैअन फ़ क़ा ल लहुल
जलीलु जल्ल व अ़ला अना लिमन स़ल्ल अ़लै
क,ज़ा द तशरीफ़वँ व तअ़ज़ीमन, फ़ क़ा ल लहू
सय्यिदी अ़ब्दुल क़ादिरिल जीलानीयु ह़ाज़िहिस
स़लातु यलीकु बिहल ह़दीसु व हाज़िहिस़्सलातु
तफ़्तहु सर्ह़ न बाबम मिनर्रह़मति व तुज़्हिरु
अ़जाइ बहा मिन त़रीक़िल ह़िक्मति व ख़ैरुम मिन
इ़ल्कि अल्फ़ न स मतिवँ व नह़रि अल्फ़ ब द
न तिवँ व स़ द क़ तिल फ़ादी न व सियामि
अल्फ़ शहरिवँ व फ़ीहा सिर्रुम मक्नूनूँ व हि य
तज्लिबुल अरज़ा क़ व तुत़य्यिबुल अख़्ला क़ व

तक़्दिल ह़वाइ ज व तग़फ़िरुज़्ज़ुनू ब व तस्तुरुल उ़यू ब व तुइ़ज़्ज़ुज़्ज़ली ल क़ा ल सय्यिदी मकीनुद्दीनि कानत हाज़िहिस़्सलातु ला तुअ़ता इल्ला लि र जुलिन कामिलिल ख़सा़इलि व कसीरिन नवाइलि व इन्न सा़हि़ ब हाज़िहिस़्सलाति इ़ज़ा अहम्महू अम्रुम मिन उमूरिद्दुन्या वल आख़िरति कुल्लु स़लातिन क़ र अहा मिन हाज़िहिस़्सलाति कानत लहू शफ़ाअ़तुन इ़न्दन्नबिय्यि व हि य स़लातुल लिलमुस़ल्ली न व कुरआनुल लिज़्ज़ाकिरी न व मौइ़ज़तुल लिलमुत्तक़ी न व वसीलतुल लिलमु तवस्सिली न व हि य हाज़िहिस़्सलातु अल महकी अ़न्हा।

तर्जमा :- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म फ़रमाने वाला है

यह "स़लातु बशाइरिल ख़ैराति अ़लन्नबिय्यि" ﷺ (नबी करीम ﷺ पर भलाइयों की बशारतों वाला दुरूद) इमामुल अइम्मा सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहु अ़न्हु की तालीफ़ है (अल्लाह हमें आप की बरकतों से माला माल फ़रमाए आमीन)

अल्लाह दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमाए हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ की आले पाक पर और आप ﷺ के अस्हाबे पाक पर।

तमाम तअ़रीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने एहसान फ़रमाया हम पर ईमान और इस्लाम की नेअ़मत से,इमामुल अइम्मा शैखुल उम्मत सय्यिदुल अन्जाब कुत्बुल अक़्ताब ग़ौसुल अअ़ज़म हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहु अ़न्हु ने अपने बअ़ज़ दीनी भाइयों से फ़रमाया:कि तुम मुझ से यह दुरूद ले लो क्यों कि मैं ने इस को अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से इलहाम के वास्ते से लिया है फिर मैंने इस दुरूद को नबी करीम ﷺ की बारगाहे अक़्दस में पेश किया मेरा इरादा था कि हुज़ूर अक़्दस ﷺ से इस दुरूद के सवाब के बारे में पूछूँगा लेकिन हुज़ूर ﷺ ने मेरे सवाल करने से पहले ही मुझे बता दिया और आप ﷺ ने मुझसे फ़रमाया इस दुरूद की फ़ज़ीलत इतनी ज़्यादा है जिसे कोई एहाता नहीं कर सकता, इस दुरूद को पढ़ने वाला निहायत अअ़ला मर्तबा पर फ़ाएज़ होगा जब भी वह किसी चीज़ का इरादा करेगा तो वह नामुराद न होगा, और अल्लाह की बारगाह में उसकी कोई भी दोआ़ रद न की जाएगी, जिस शख़्स ने इसे एक बार भी पढ़ लिया तो

अल्लाह उसे बख़्श देगा और उन्हें भी बख़्श देगा जो उस मज्लिस में होंगे, और जब उसकी मौत का वक़्त आएगा तो उस वक़्त उस के पास चार फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होंगे, उन में से पहला फ़िरिश्ता इस दुरूद को पढ़ने वाले से शैत़ान को दूर भगाएगा और दूसरा फ़िरिश्ता उसे कल्मए तौह़ीद व कल्मए रिसालत का पाबंद करेगा और तीसरा फ़िरिश्ता उसे जामे कौसर से सैराब करेगा और चौथे फ़िरिश्ते के हाथ में एक सोने का त़श्त होगा जो जन्नती फलों से भरा होगा और अल्लाह उस से फ़रमाएगा ऐ अल्लाह के बन्दे तू ख़ुश होजा देख जन्नत में यह तेरा मह़ल है तो वह उसे देखेगा लेह़ाज़ा वह जन्नत में अपना मह़ल अपनी रूह़ के निकलने से पहले ही देख लेगा और वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा उस की क़ब्र में अम्नो चैन होगा उसे उस में ना तो कोई वह़शत होगी ना ही कोई तंगी, वहाँ उस के लिए रह़मत के चालीस दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उस के सर पर नूर की क़िन्दील लटकाई जाएगी उसी के साथ वह क़यामत के दिन उठाया जाएगा उस के दाएँ जानिब एक फ़िरिश्ता रहेगा जो उसे बशारत देगा और बाएँ जानिब भी एक फ़िरिश्ता होगा जो उसे दिलासा देता होगा, और उस पर दो जोड़े होंगे, उस के लिए जन्नती नजीब ब त़ौरे हदया पेश किया जाएगा जिस पर

वह सवार होगा उसे ना तो कोई ह़सरत होगी और ना ही कोई नदामत और ना उस के किसी बुरे अ़मल का ह़िसाब लिया जाएगा, जब वह पुल सि़रात़ पर गुज़रेगा तो जहन्नम उस से कहेगी ऐ अल्लाह के आज़ाद करदा बन्दे तू तेज़ी से गुज़र जा क्यों कि मैं तुझ पर ह़राम कर दी गई हूँ और तू जन्नत में जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जा, जन्नत में उसे सारी नअ़मतें दी जाएंगी और हर जन्नत के दरवाज़े के लिए चाँदी के चालीस कुब्बे होंगे और हर कुब्बे में नूर के सौ १००, ख़ेमे होंगे और हर ख़ेमे में काफ़ूर का तख़्त होगा, हर तख़्त पर रेशम का बिस्तर होगा, और हर बिस्तर पर हूरुल ईन होगी जिसे अल्लाह ने इस क़दर सुथरा और पाकीज़ा बनाया है गोया कि वह चौदहवीं का चाँद हो, फिर अल्लाह उसे ऐसी नेअ़मतें अ़त़ा फ़रमाएगा जिसे ना तो किसी आँख ने देखा होगा, ना किसी कान ने सुना होगा और ना कभी किसी बशर के दिल में ख़्याल गुज़रा होगा। ह़दीसे पाक में नबी करीमﷺसे मर्वी है कि शबे मेअ़राज जब आपﷺको आप के रब के हुज़ूर ले जाया गया तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने आप से फ़रमाया ऐ (मेरे ह़बीब)मोह़म्मदﷺयह आसमान किस का है तो आपﷺने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब, तेरा है, फिर अल्लाह ने आपﷺसे फ़रमाया

ऐ (मेरे ह़बीब) मोह़म्मद ﷺ आप किस के लिए हैं तो आप ﷺ ने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब, मैं भी तेरे लिए हूँ, फिर अल्लाह ने आप ﷺ से फ़रमाया ऐ (मेरे ह़बीब) मोह़म्मद ﷺ बताओ मैं किस के लिए हूँ? तो नबी करीम ﷺ खामोश रहे और आप ﷺ को रब के हुजूर कुछ कहने से ह़या सी आगई फिर रब्बे जलील ने आप ﷺ से फ़रमाया ऐ मेरे ह़बीब ﷺ मैं उस के लिए हूँ जो आप पर दुरूद भेजे, फिर अल्लाह ने आप ﷺ को कमाल शराफ़तो बुजुर्गी और अ़ज़मतो बुलन्दी से सर फ़राज़ फ़रमाया, उस के बाद हुजूर सय्यिदी अ़ब्दुल क़ादिरजीलानी रदि़यल्लाहु अ़न्हु ने अपने उस दीनी भाई से फ़रमाया इस दुरूद के साथ इस ह़दीस की मुकम्मल मुनास्बत है, यह दुरूद रह़मत के सत्तर दरवाज़े खोलता है और ह़िक्मत के त़रीक़े से अपने अ़जाएबात का जुहूर फ़रमाता है, यह हज़ारों ग़ुलाम आज़ाद करने, हज़ारों क़ुर्बानी के जानवर क़ुर्बान करने,तमाम फ़िदया देने वालों के स़दक़ा करने और हज़ारों महीना रोज़ा रखने से बेहतर है, इस में पोशीदह राज़ है कि यह रिज़्क़ में कुशादगी पैदा करता है, अख़्लाक़ को पाकीज़ा बनाता है और जुम्ला ज़रूरतों को पूरा करता है, गुनाहों को मिटा देता है ऐबों को ढाँप लेता है, और ज़लील को इ़ज़्ज़त बख़्शाता है, सय्यिदी मकीनुद्दीन ने फ़रमाया कि यह दुरूद उस

शख़्स को दिया जाता है जो कामिल ख़स्लतों वाला और कसीर नवाज़िश करने वाला हो, इस दुरूद को पढ़ने वाले को जब भी दुन्यवी व उख़रवी मोआ़मलात में से कोई मोआ़मला दर पेश हो तो इस दुरूद को मुकम्मल तौर से पढ़े तो यह दुरूद उसके लिए नबी करीम ﷺ की बारगाहे अक़्दस में शफ़ीअ़ होगा, बल कि ह़क़ीक़त यह है कि यह दुरूद नमाज़ियों के लिए नमाज़ है, ज़िक्र करने वालों के लिए कुर्आन है, और परहेज़गारों के लिए नसीह़त है और वसीला ढूँढ़ने वालों के लिए वसीला है जिस दुरूद के बारे में यह तमाम फ़ज़ीलतें बयान की गई हैं वह यह है।

नोटः- आस्तान-ए-ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त मस्लन "दुरूदे रूह़ानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी, सलामे मोह़म्मदी मअ़ अस्रारे "मीम ह़ा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम" वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

व बिही नस्तई़नु

और हम उसी से मदद चाहते हैं

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मुअमिनीन बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व अन्नल्ला ह ला युज़ीउ़ अज्रल मुअमिनीन

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह्मद ﷺ पर जो मोमिनों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक अल्लाह ईमान वालों के अज्र को ज़ाएअ़ नहीं करता,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिज़्ज़ाकिरी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम, उज़्कुरुल्ला ह ज़िक्रन कसीरवँ व सब्बिहू हु बुक्रतवँ व असीलन,

हुवल्लज़ी युस़ल्ली अ़लैकुम व मलाइकतुहू लियुख़रि ज कुम मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व का न बिलमुअमिनी न रह़ीमन, तह़िय्यतुहुम यौ म यल्क़ौनहू सलामूँ व अ अ़द्द लहुम अज्रन करीमन,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो ज़िक्र करने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूँगा, तुम अल्लाह को ख़ूब ख़ूब याद करो,और उसकी पाकी बोलो सुब्ह़ो शाम वह वही है जो तुम पर रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और उस के फ़िरिश्ते भी ता कि तुम्हें तारीकियों से निकाल कर नूर की त़रफ़ ले जाए और वह मोमिनों पर बड़ा मेहरबान है, जिस दिन वह उस से मुलाक़ात करेंगे तो उनका तोह़फ़ा सलाम होगा और उस ने उन के लिए बड़ी अ़ज़मत वाला अज्र तयार कर रखा है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल आ़मिली न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः अन्नी ला

उद़ीउ़ अ़ म ल आ़मिलिम मिन्कुम मिन ज़ क रिन औ उन्सा, व बिमा क़ा लः मन अ़ मि ल स़ालिह़म मिन ज़ क रिन औ उन्सा व हु व मुअमिनुन फ़ उलाइ क यदख़ुलू नल जन्न त युर्ज़कू न फ़ी हा बिग़ैरि ह़िसाबिन,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो अ़मल करने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्त़े कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया,बेशक मैं तुम में से अ़मल करने वाले मर्द और औ़रत के अ़मल को ज़ाएअ़ नहीं करता, और इस ह़क़ के वास्त़े कि उस ने फ़रमाया : जिस ने भी नेक अ़मल किया मर्द या औ़रत में से इस ह़ाल में कि वह मोमिन है तो वह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन्हें उस में बेह़िसाब रिज़्क़ दिया जाएगा,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल अव्वा बी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः फ़ इन्नहू का न लिल्अव्वाबी न ग़फ़ूरन, लहुम्मा यशाऊ न इ़न्द रब्बिहिम ज़ालि क जज़ाउल

मुह़सिनी न।

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो रुजूअ़ होने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया,बेशक वह रुजूअ़ होने वालों को बख़शने वाला है उनके लिए वह सब है जो वह चाहें उनके रब के पास, यह एह़सान करने वालों का बदला है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश़्शिरि लित्तव्वाबी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः इन्नल्ला ह युह़िब्बुत्तव्वाबी न व युह़िब्बुल मु त त़हहिरी न, व हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौ ब त अ़न इ़बादिही व यअ़फ़ू अ़निस्सय्यिआति,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो तौबा करने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया,बेशक अल्लाह तौबा करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और सुथरा रहने वालों को मह़बूब बनाता है, वह वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और

गुनाहों को मोआ़फ़ करदेता है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मुख़लिसी़ न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः फ़ मन का न यरजू लि क़ा अ रब्बिही फ़ल्यअ़ मल अ़ म लन स़ालिह़वँ व ला युशरिक बिइ़बादति रब्बिही अ ह़दन, मुख़लिसी़ न लहुद्दी न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो एख़लास़ वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया,पस जो अपने रब से मुलाक़ात का उम्मीद वार हो तो वह नेक अ़मल करे और अपने रब की इ़बादत के साथ किसी को शरीक न ठहराए, सिर्फ़ उसी के लिए अपने दीन को ख़ालिस़ करे,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्ख़ाशिई़ न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः वस्तई़नू बिस़्स़ब्रि वस़्सलाति व इन्नहा ल कबीरतुन इल्ला अ़लल्ख़ाशिई़ न, अल्लज़ी न यजुन्नू न अन्नहुम

मुलाक़ू रब्बिहिम व अन्नहुम इलैहि राजिऊ न अल्लज़ी न यज़्कुरूनल्ला ह क़ियामवँ व कुऊ़दवँ व अ़ला जुनूबिहिम व य त फ़क्करू न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल अरदि रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बाति़लन सुब्हा न क फ़क़िना अ़ज़ाबन्नारि,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो डरने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, तुम मदद चाहो स़ब्र और नमाज़ से बेशक यह बहुत भारी है मगर उन पर जो डरने वाले हैं कि उन्हें अपने रब से मुलाक़ात का यक़ीन है और यह कि वह उसी की त़रफ़ पल्टेंगे, यह वह लोग हैं जो अल्लाह को याद करते हैं खड़े होकर, बैठ कर और अपनी करवटों पर और ग़ौरो फ़िक्र करते हैं आसमानो ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे पालनहार तूने इसे बेकार नहीं पैदा किया,तेरी ही पाकी है पस तू हमें आग के अ़ज़ाब से बचा ले,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबशशिरि लिल्मुस़ल्ली न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व

अक़िमिस़्सला त इन्नस़्सला त तन्हा अ़निल फ़ह़शाइ वल मुन्करि, अक़िमिस़्सला त वअमुर बिल मअ़रूफ़ि वन्ह अ़निलमुन्करि, वस़्बिर अ़ला मा असा़ ब क इन्न ज़ालि क मिन अ़ज़्मिल उमूरि,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह म्मद ﷺ पर जो नमाज़ियों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, तुम नमाज़ क़ाएम रखो बेशक नमाज़ बेह़याई और बुरी बात से रोक देती है, तुम नमाज़ क़ाएम रखो, भलाई का हुक्म दो, बुराई से रोको और अपनी मुसीबत पर स़ब्र करो, बेशक यह बड़ी हिम्मत के काम हैं,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिस़्साबिरी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः इन्नमा युवफ़्फ़स़्साबिरू न अज्रहुम बिग़ैरि ह़िसाबिन,उलाइकल्लज़ी न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ क हुम उलुल्अल्बाबि,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार

मोहम्मद ﷺ पर जो सब्र करने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस हक़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक वह सब्र करने वालों को उनका अज्र भरपूर देता है यह वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और यही लोग अ़क़्ल वाले हैं,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्ख़ाइफ़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व लिमन ख़ा फ़ मक़ा म रब्बिही जन्नतानि व अम्मा मन ख़ा फ़ मक़ा म रब्बिही व नहन्नफ़्स अ़निल हवा, फ़ इन्नल जन्न त हियल मअवा,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो ख़ौफ़ रखने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस हक़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और जो शख़्स अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरता है उसके लिए दो जन्नतें हैं, वह शख़्स जो अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरता रहा और उसने नफ़्स को ख़्वाहिशात से बाज़ रखा तो बेशक जन्नत ही(उसका) ठिकाना होगा,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मुत्तक़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व रह़मती व सि अ़त कुल्ल शैइन फ़ स अक्तुबुहा लिल्लज़ी न यत्तक़ू न व युअतूनज़्ज़का त वल्लज़ी न हुम बिआयातिना युअमिनू नल्लज़ी न यत्तबिऊ़ नर्रसूलन्नबी यल उम्मी य उलाइ क लहुम जज़ाउद्विअ़फ़ि बिमा अ़मिलू व हुम फ़िलग़ुरुफ़ाति आमिनू न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह्म्मद ﷺ पर जो परहेज़गारों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया,और मेरी रह़मत हर चीज़ पर वुस्अ़त रखती है पस मैं अ़नक़रीब इस रह़मत को उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो परहेज़गारी एख़्तियार करते हैं और ज़कात देते हैं और वही लोग ही हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, यह वह लोग हैं जो उस रसूल की पैरवी करते हैं जो उम्मी नबी हैं, ऐसे ही लोगों के लिए दुगना अज्र है उनके अ़मल के बदले में, और वह जन्नत के बालाख़ानों में अम्नो अमान से होंगे,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मुख़बिती न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमु अल्लज़ी न इज़ा जुकिरल्लाहु वजिलत कुलूबुहुम वल्लज़ी न युअतू न मा आतौ व कुलूबुहुम व जिलतुन अन्नहुम इला रब्बिहिम राजिऊ़ न उलाइ क युसारिऊ़ न फ़िल ख़ैराति व हुम ल हा साबिकू न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो आ़जेज़ी करने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, यह वह लोग हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाए तो इनके दिल डर जाते हैं, यह वह लोग हैं जो दिए हुए से देते हैं और इनके दिल डरते रहते हैं, वह अपने रब की त़रफ़ पलटने वाले हैं, यह वह लोग हैं जो नेक कामों में तेज़ी से बढ़ते हैं और वही इस में आगे निकल जाने वाले हैं;

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिस़्साबिरी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व

बशिरिस़्साबिरी नल्लज़ी न इज़ा असा बत्हुम मुसीबतुन क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ न, उलाइ क अ़लैहिम स़ ल वातुम मिर्रब्बिहिम व रह़ मतूँ व उलाइ क हुमुल मुहतदून, इन्नी जज़ैतुहुमुल यौ म बिमा स़ ब रू अन्नहुम हुमुल्फ़ाइजू न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो स़ब्र वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और तुम इन स़ब्र करने वालों को बशारत दो कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती है तो कहते हैं बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और हम अल्लाह की त़रफ़ पलटने वाले हैं यही वह लोग हैं जिन पर उनके रब की त़रफ़ से पै दर पै नवाज़िशें हैं और रह़मतें हैं और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं, बेशक मैं ने उन्हें आज बदला दे दिया उसका जो उन्हों ने स़ब्र किया बेशक यही लोग कामयाब हैं,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्काज़िमी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः

वल्काज़िमीनल ग़ै ज़ वल्आ़फ़ी न अ़निन्नासि वल्लाहु युह़िब्बुल मुह़सिनी न फ़ मन अ़फ़ा व अस्ल ह़ फ़ अज्रुहू अ़लल्लाहि इन्नहू ला युह़िब्बुज़्ज़ालिमी न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो बरदाश्त करने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और(यह वह लोग हैं) जो ग़ुस्सा ज़ब्त करने वाले हैं और लोगों से दरगुज़र करने वाले हैं और अल्लाह एह़सान करने वालों से मोह़ब्बत फ़रमाता है, पस जिसने मुआ़फ़ कर दिया और सुलह़ चाहा तो उसका अज्र अल्लाह पर है, बेशक वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मुह़सिनी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व अह़सिनू इन्नल्ला ह युह़िब्बुल मुह़सिनी न, मन जा अ बिल ह़ स न ति फ़ लहू अ़श्रु अम्सालि हा व मन जा अ बिस्सय्यिआति फ़ला युज ज़ा इल्ला मिस्ल हा व हुम ला युज़्लमू न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो एहसान करने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस हक़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और तुम ख़ूब एहसान करो बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है, जो कोई एक नेकी लाएगा तो उसके लिए उस जैसी दस नेकियाँ हैं ,और जो एक गुनाह लाएगा तो उसको उस जैसे एक गुनाह के सिवा सज़ा नहीं दी जाएगी, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिश्शाकिरी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः वश्कुरू लिल्लाहि इन कुन्तुम इय्याहु तअ़बुदू न ल इन श कर तुम ल अज़ी दन्नकुम,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो शुक्र करने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस हक़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो, अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर ज़रूर एज़ाफ़ा करूँगा,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल मुनफ़िक़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमु व मिम्मा र ज़क़्नाहुम युनफ़िक़ू न, व मा अन फ़क़्तुम मिन शैइन फ़ हु व युख़लिफ़ुहू व हु व ख़ैरुर्राज़िक़ी न,।

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो खर्च करने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और हमने उन्हें जो दिया है उस में से ख़र्च करते हैं, और तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगे तो वह उसके बदले में और देगा और वह सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मु त स़द्दिक़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व अन त स़द्दक़ू ख़ैरुल्लकुम इन्नल्ला ह यज ज़िल मु त स़द्दिक़ी न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार

मोह़म्मद ﷺ पर जो स़दक़ा देने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्त़े कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और ये कि तुम ख़ूब स़दक़ा करो, तुम्हारे लिए बेहतर है बेशक अल्लाह ख़ूब स़दक़ा करने वालों को बदला देता है,।

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिस्साइली न बिमा क़ाललाहुल अ़ज़ीमुः फ इन्नी क़रीबुन उजीबु दअ़वतद्दाइ इज़ा दआ़नि, व क़ा ल रब्बुकुम उदऊ़नी अस्तजिब ल कुम,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो माँगने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्त़े कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक मैं क़रीब हूँ मैं पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब वह मुझे पुकारे, और तुम्हारे रब ने फ़रमाया तुम मुझ से दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूँगा,।

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि

लिस़्सालिह़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः अन्नल्अर्द़ यरिसु हा इ़बादियस़्सालिहू न, उलाइ क हुमुल वारिसू न, अल्लज़ी न यरिसूनल फ़िरदौ स हुम फ़ी हा ख़ालिदू न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह्म्मद ﷺ पर जो नेक लोगों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होते हैं, यही लोग वारिस हैं जो जन्नत के सब से अअ़ला बाग़ात की विरासत पाएंगे, वह उन में हमेशा रहेंगे,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल मुस़ल्ली न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युस़ल्लू न अ़लन्नबिय्यि या अय्युहल्लज़ी न आमनू स़ल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तसलीमन, युअतिकुम किफ़्लैनि मिर्रह़मतिही व यज्अ़ल्लकुम नूरन तमशू न बिही व यग़फ़िर ल कुम वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार

मोह़म्मद ﷺ पर जो दुरूद भेजने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते नबी ﷺ पर दुरूद भेजते हैं ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम भेजो, वह तुम्हें अपनी रह़मत के दो ह़िस्से अ़ता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिए नूर पैदा फ़रमा देगा जिस में तुम चला करोगे और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा देगा और अल्लाह बहुत बख़शने वाला बड़ा रह़म फ़रमाने वाला है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल मुबश्शिरी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व बश्शिरिल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिह़ाति, लहुमुल बुशरा फ़िल ह़या तिद्दुन्या व फ़िल आख़िरति ला तब्दी ल लि कलिमातिल्लाहि ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अ़ज़ीमु,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो बशारत देने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, और आप ﷺ ईमान वालों और नेक

काम करने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाएँ, उनके लिए दुन्या की ज़िन्दगी में बशारत है और आख़िरत में भी, अल्लाह के फ़रमान बदला नहीं करते यही अ़ज़ीम कामयाबी है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल फ़ाइज़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः व मँय्युति़इ़ल्ला ह व रसूलहू फ़ क़द फ़ा ज़ फ़ौज़न अ़ज़ीमन,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो कामयाब लोगों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्त़े कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, जिस ने अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की एत़ाअ़त की यक़ीनन उसने बड़ी कामयाबी पाई,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिज़्ज़ाहिदी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः अलमालु वल बनू न ज़ीनतुल ह़यातिद्दुन्या वल बाक़ियातुस्सालिह़ातु ख़ैरुन इ़न्द रब्बि क सवाबवँ व ख़ैरुन अ म लन,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो कनारह कश रहने वालों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस हक़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, माल और औलाद दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और बाक़ी रहने वाली सिर्फ़ नेकियाँ हैं जो तम्हारे रब के नज़्दीक सवाब के लिहाज़ से बेहतर हैं और आरजू के लिहाज़ से भी ख़ूब तर हैं,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल उम्मीयी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः कुन्तुम ख़ै र उम्मतिन उख़रिजत लिन्नासि तअमुरू न बिल मअ़रूफ़ि व तन हौ न अ़निल मुन्करि,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो उम्मतियों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस हक़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, तुम बेहतरीन उम्मत हो जो सब लोगों के लिए ज़ाहिर किए गए हो तुम अच्छी बात का हुक्म देते हो और बुरी बात से रोकते हो,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला

सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल मुस्त़फ़ी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः सुम्म औरस्नल किताबल्लज़ी नस्त़फ़ै ना मिन इ़बादि ना फ़ मिन्हुम ज़ालिमुल्लिनफ़्सिही, व मिनहुम मुक़्तसिदुँ व मिन्हुम साबिकुम बिल्ख़ैराति बिइ़ज़्निल्लाहि जा लि क हु वल फ़द़लुल कबीरु,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो चुने हुए लोगों को बशारत देने वाले और खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्त़े कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, फिर हमने इस किताब का वारिस ऐसे लोगों को बनाया जिन्हें हमने अपने बन्दों में से चुन लिया तो उन में से कुछ अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ लोग दर्मियान में रहने वाले हैं और कुछ लोग अल्लाह के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़ जाने वाले भी हैं, यही बड़ा फ़ज़्ल है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल मुज़्निबी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः कुल या इ़बादियल्लज़ी न अस्रफ़ू अ़ला अनफ़ुसिहिम ला

तक़्नतू मिर्रह़मतिल्लाहि इन्नल्ला ह यग़फ़िरुज़्ज़ुनू ब जमीअ़न इन्नहू हु वल ग़फ़ूरुर्रह़ीमु ,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो गुनहगारों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, आप ﷺ फ़रमा दें ऐ मेरे वह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म कर लिया है तुम अल्लाह की रह़मत से मायूस न हो बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को बख़्श देता है, बेशक वही बहुत बख़्शने वाला बड़ा रह़म फ़रमाने वाला है,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल मुस्तग़फ़िरी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमु व मँय्यअ़मल सूअन औ यज़्लिम नफ़ सहू सुम्म यस्तग़फ़िरिल्ला ह यजिदिल्ला ह ग़फ़ूरर्रह़ीमन,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो बख़्शिश चाहने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, जिसने बुरा काम किया या अपनी जान पर जुल्म किया फिर वह अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो वह

अल्लाह को पाएगा बहुत बख़्शने वाला बड़ा रहम करने वाला,

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल आ़बिदी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमु इन्नल्लज़ी न स ब क़त लहुम मिन्नल हुस्ना उलाइ क अ़न्हा मुब्अ़दू न, ला यस मऊ़ न ह़सीसहा व हुम फ़ी मश त हत अन्फ़ुसुहुम ख़ालिदू न ला यह़ज़ुनुहुमुल फ़ ज़ उ़ल अकबरु व त त लक़्क़ाहुमुल मलाइ क तु हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम तू अ़दू न,

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो इ़बादत करने वालों को बशारत देने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक जिन लोगों के लिए पहले से ही हमारी त़रफ़ से भलाई मुक़र्रर हो चुकी है वह उस जहन्नम से दूर रखे जाएंगे वह उस की आहट भी न सुनेंगे और वह उन में हमेशा रहेंगे जिन की उनके दिल ख़्वाहिश करेंगे, सबसे बड़ी हौलनाकी उन्हें रन्जीदह न करेगी और फ़िरिश्ते उनका इस्तेक़बाल करेंगे कि यह तुम्हारा ही दिन है कि जिसका तुमसे वादा किया

जाता था,

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिनिल बशीरिल मुबश्शिरि लिल्मुस्लिमी न बिमा क़ालल्लाहुल अ़ज़ीमुः इन्नल मुस्लिमी न वल मुस्लिमाति वल मुअमिनी न वल मुअमिनाति वल क़ानिती न वल क़ानिताति वस़्स़ादिक़ी न वस़्स़ादिक़ाति वस़्स़ाबिरी न वस़्स़ाबिराति वल ख़ाशिई़ न वल ख़ाशिअ़ाति वल्मु त स़द्दिक़ी न वल मु त स़द्दिक़ाति वस़्स़ाइमी न वस़्स़ाइमाति वल ह़ाफ़िज़ी न फ़ुरू जहुम वल ह़ाफ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरीनल्लाह कसीरवँ वज़्ज़ाकिराति अ अ़द्दल्लाहु लहुम मग़फ़िरतवँ व अज रन अ़ज़ीमन, व अल्लै स लिल इनसानि इल्ला मा सअ़ा, व अन्न सअ़ यहू सौ फ़ युरा सुम्म युज ज़ाहुल्जज़ा अल औफ़ा व अन्न इला रब्बिकल मुन्त ह व स़ल्लल्लाहु अ़ला सय्यिदि न मुह़म्मदिवँ व अ़ला आलिही व स़ह़बिही व सल्ल म

ऐ हमारे अल्लाह तू दुरूदो सलाम भेज हमारे सरदार मोहम्मद ﷺ पर जो मुसलमानों को बशारत देने वाले और

खुशख़बरी सुनाने वाले हैं इस ह़क़ के वास्ते कि अ़ज़मत वाले अल्लाह ने फ़रमाया, बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें, और फ़रमाँबरदार मर्द, फ़रमाँ बरदार औ़रतें, सच्चे मर्द, सच्ची औ़रतें, स़ब्र वाले मर्द, स़ब्र वाली औ़रतें, आ़जेज़ी वाले मर्द, आ़जेज़ी वाली औ़रतें, स़दक़ा व ख़ैरात करने वाले मर्द, स़दक़ा व ख़ैरात करने वाली औ़रतें, रोज़हदार मर्द, रोज़हदार औ़रतें, अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करने वाले मर्द, और ह़िफ़ाज़त करने वाली औ़रतें, कस्रत से अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र करने वाली औ़रतें अल्लाह ने इन सब के लिए बख़्शिश और अ़ज़ीम अज्र तयार कर रखा है इनसान के लिए वही है जिस की वह कोशिश करे और यह कि उस की कोशिश अ़नक़रीब देखी जाएगी फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा और यह कि (बिल आख़िर सबको) आप के रब ही की त़रफ़ पहुँचना है, और अल्लाह दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमाए हमारे सरदार म ो ह् म म द ﷺ पर और आप ﷺ की आले पाक पर और आप ﷺ के अस्ह़ाबे पाक पर ।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

फ़ज़ाएले रूह़ानी ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ व सलामे मुह़म्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैर मन्कूत़ व दुआए अस्रारे क़ल्बी

अल्लाह तबार क व तआ़ला का बे इन्तेहा रह़मो करम है और उसके ह़बीब रह़मतुल्लिल आ़लमीन ﷺ की बे इन्तेहा रह़मतो शफ़्क़त है कि पेशे नज़र रूह़ानी ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ को हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म व हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम की रूह़ानी व इरफ़ानी ख़ुसूसी तवज्जुहात से आसतानए आ़लिया ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम पर तरतीब देने की तौफ़ीक़ अ़ता हुई इस रूह़ानी ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ में ल हुल अस्माउल हुस्ना(उसके लिए अच्छे नाम हैं)का फ़ैज़, ल हुमुल बुश्रा फ़िल ह़यातिदुन्या व फ़िल आख़िरति(उनके लिए बशारत है दुन्यवी ज़िन्दगी में और आख़िरत में) की बशारते सादेक़ा और वअ़बुद रब्ब क ह़त्ता यअति य कल

यक़ीनु(तुम अपने रब की इ़बादत करो यहाँ तक कि तुम्हें ह़क़्क़ुल यक़ीन ह़ासिल हो)का मर्तबए ह़क़्क़ुल यक़ीन का नूर मौजूद है जिस में अल्लाह जल्ल मज्दुहू की तह़मीद व तशक्कुर पर मुश्तमिल ख़ज़ाएने रूह़ानी व नेअ़मते सर्मदी जिस का हर ह़र्फ़ व कल्मा मज्लिसे मोह़म्मदी ﷺ व मज्लिसे औलिया में मक़बूल व मह़बूब है जो आयाते क़ुर्आनिया व अह़ादीसे नब्वीया व इल्हामाते रब्बानिया व मुशाहदाते रूह़ानिया व तलक़ीनाते क़ल्बिया व हिदायाते औलिया और बशारते स़ादिक़ा के साथ अपने अन्दर ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ व ज़िक्रे अ़ज़मते मुस्त़फ़ा ﷺ व ज़िक्रे रिफ़अ़ते मुस्त़फ़ा ﷺ ईमाने मुस्त़फ़ा ﷺ इस्लामे मुस्त़फ़ा ﷺ एह़साने मुस्त़फ़ा ﷺ अदबे मुस्त़फ़ा ﷺ और ज़िक्रे शाने मुस्त़फ़ा ﷺ ब यक वक़्त यक्जा किए हुए है,रूह़ानी ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ में ह़म्दे इलाही करते हुए ख़िल्क़ते मुस्त़फ़ा ﷺ से लेकर विलादते मुस्त़फ़ा ﷺ तक के जुम्ला अहम अह़वाल व कैफ़ियात निहायत ह़सीन अन्दाज़ में जामेअ़ तल्ख़ीस़ के साथ पेश किए गए हैं, जिस से इस बात की त़रफ़ इशारा है कि ख़िल्क़ते मुस्त़फ़ा ﷺ व विलादते मुस्त़फ़ा ﷺ से अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ने अपने ह़म्दो शुक्र, ज़िक्रो फ़िक्र, इ़बादतो इत़ाअ़त, मोह़ब्बतो मोअद्दत, रेज़ा व

वफ़ा, इन्आ़मो इक्राम को ज़ाहिर फ़रमाया जिस से यह बात साफ़ हो जाती है कि ख़िल्क़ते मुस्तफ़ा ﷺ व विलादते मुस्तफ़ा ﷺ से मक़्सूद सिर्फ़ और सिर्फ़ ह़म्दे इलाही व शुक्रे इलाही है और ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ ह़म्दो शुक्र के इज़्हार का नाम है, इस ह़म्द पर मुश्तमिल ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ में इस ह़क़ीक़त को वाशगाफ़ किया गया है कि ख़िल्क़ते नूरे मोह़म्मदी ﷺ से क़ब्ल नूरे मोह़ब्बत अज़्ली अब्दी क़दीमी दाइमी ज़ातो सिफ़ात वाले अल्लाह के पास था पस अल्लाह ने अपनी ज़ातो सिफ़ात के मज़्हरे अतम को अपनी मोह़ब्बतो इरादत का नाम दिया जिस का इशारा क़दीमी दाइमी अज़्ली अब्दी कलाम इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा द शैअन अँय्यकू ल लहू कुन फ़ यकूनु(बेशक उसका अम्र है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो उस से सिर्फ़ कहता है होजा पस वह होजाती है)में मौजूद है, और आप ﷺ की मअ़रिफ़ते ह़क़ीक़ी की त़रफ़ रहनुमाई ह़ासिल करने और ज़ाते लै स क मिस्लिही शैउन(उस की मिस्ल कोई चीज़ नहीं) के बह़रे वह़दत व ज़ाते अह़दियत की त़रफ़ हिदायत पाने के लिए अल्लाह जल्ल मज्दुहू ने नासूती अ़वालिम से तअ़ल्लुक़ रखने वालों के लिए आप ﷺ को "इन्ना अर्सल्ना क शाहिदम

मुबश्शिरवँ व नज़ीरवँ व दाइयन इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम मुनीरन"(बेश्क हमने आप को गवाह, खुशख़बरी देने वाला, डर सुनाने वाला, और अल्लाह की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाला और रौशन चराग़ बनाकर भेजा है) के नूरी जामए स़फ़ा में मलबूस फ़रमाकर व "युअ़ल्लिमुहुमुल किता ब वलहि़क्म त व युज़क्कीहिम"(यह ह़बीबﷺइन लोगों को किताबो हि़क्मत सिखाते हैं और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमाते हैं)की शान बताई और आपﷺकी अ़ज़मतो शान को अ़क़्ले मआ़श से आ़लमे नासूत में नफ़्से अम्मारह के आला से नापने वालों के लिए "व मा ऊतीतुम मिनल इ़ल्मि इल्ला क़लीलन"(और तुम्हें इ़ल्म नहीं दिया गया मगर बहुत थोड़ा)का ताज़ियाना दिया ता कि वह "ख़ त मल्लाहु अ़ला कुलूबिहिम व अ़ला सम्इ़हिम व अ़ला अब्सारिहिम ग़िशावतूँ व ल हुम अ़ज़ाबुन अ़ज़ीमुन"(अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर कर दिया और उनकी आँखों पर अंधेरा ही अंधेरा है और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है) के क़अ़रे मज़ल्लत से महफ़ूज़ हो जाएं जिस से यह बात वाज़ेह़ हो जाती है कि शाने मुस्त़फ़ाﷺव अ़ज़मते मुस्त़फ़ाﷺकी मअ़रिफ़त के लिए तौफ़ीक़े इलाही से उस वक़्त अ़क़्ले कुल का

बाब खुलता है जब बन्दा आप ﷺ की हिदायतो रहनुमाई के मुताबिक़ मक़ामे वहदत व मक़ामे अहदियत पर पहुँचता है इस से क़ब्ल महेज़ ख़्याल आराई और तअ़क्कुल पसन्दी के सिवा कुछ नहीं, इस रूहानी ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ में जुम्ला अ़वालिम में नूरे मोहम्मदी ﷺ की अ़ज़मतो मक़्बूलियत और शानो रिफ़अ़त को भी ब्यान किया गया है पस अगर तालिबे हक़ीक़ी इस को पढ़ना शुरूअ़ करे तो उस को फ़ौरन अ़वालिमे ग़ैबिया व अहवाले रूहानिया का मुशाहदा होने लगे गा यह ऐसा फ़ैज़ बख़्श गन्जुल अस्रार मख़्ज़ने रूहानिया है कि अगर इस को कोई शख़्स रोज़ाना सुब्हो शाम पढ़ने का मअ़मूल बनाए तो वह अगर ना अहल हो तो अहल वाला बन जाएगा उसका ज़ाहिरो बातिन हर ज़ाहिरी व बातिनी गुनाह से पाक व साफ़ व अम्राज़े क़ल्बिया से महफ़ूज़ हो जाएगा, वह सलामतिये ईमान की दोलत से शर्फ़याब हो कर नूरे इस्लाम व मक़ामे एहसान के लाएक़ क़रार पाएगा उस पर अल्लाह की रहमतो बख़्शिश की मौस्ला धार बारिश हो गी और उस के करम के ख़ज़ाने उस पर खोल दिए जाएंगे जिस से उस के हम्नवा व हम मज्लिस लोग भी फ़ैज़याब होंगे, उस पर आलमे अरवाह का रूहानी फ़ैज़ जारी व सारी हो

जाएगा उसे रूहो क़ल्ब के अस्रार से नवाज़ा जाएगा जुम्ला मअ़मूलात का मुशाहदा करने वाला होगा और वह "मन अ़ र फ़ नफ़्सहू फ़ क़द अ़ र फ़ रब्बहू" (जिस ने अपने नफ़्स को पहचाना तो यक़ीनन उस ने अपने रब को पहचाना) के इ़रफ़ाने ह़क़ से नवाज़ा जाएगा उसे यक़ीनी तौ़र पर अल्लाह व रसूल की ख़ुश्नूदी ह़ासिल हो गी और राहे शरीअ़त व त़रीक़त व मअ़रिफ़त और ह़क़ीक़त की ज़ाहिरी व बात़िनी तौ़र पर सय्यिदी बाज़े अशहब मोह़युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रहबरी ह़ासिल होगी, अगर बे अ़मल इसको पढ़े तो नेक व स़ालेह़ हो जाएगा बद अख़लाक़ को हुस्ने ख़ुल्क़ की दौलत मिलेगी और वसाविसे नफ़्सानी व अफ़आ़ले शैत़ानी व ख़साइले बहाइमी में मुलव्विस शख़्स को इन तमाम चीज़ों से नजात ह़ासिल होगी और वह अ़क़्ल की आफ़तों से मह़फ़ूज़ हो जाएगा उस का क़ल्ब हर लम्ह़ा ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ रहेगा उस पर रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और मर्तबए ग़ेना से नवाज़ा जाएगा, रूह़ानी ज़िक्रे ई़द मीलादुन्नबी ﷺ के बाद सलामे मोह़म्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैर मन्कूत न० १३ भी मज़कूर है अगर कोई शख़्स रूह़ानी ज़िक्रे ई़द मीलादुन्नबी ﷺ के बाद सलामे

मोहम्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैर मन्कूत को १००/११/५ बार रोज़ाना पढ़ने का मअ़मूल बनाएगा उसे अल्लाह व रसूल की मोह़ब्बत का नूर ह़ासिल होगा हुजूर अक़्दस ﷺ व अहले बैते केराम का दीदार नसीब होगा और स़ह़ाबएकेराम के फ़ैज़ान से माला माल होगा वह हर ज़माना में हर बला व मुसीबत ह़ादसा व हलाकत और हर फ़ित्ना से मह़फ़ूज़ रहेगा सलामे मोह़म्मदी ﷺ ग़ैर मन्कूत के बाद "दुआ़ए अस्रारे क़ल्बी" भी शामिल है जो रूह़ानी फ़ुयूज़ो बरकात से पहली बार ज़ुहूर में आया है इस के फ़ज़ाइलो बरकात एह़ात़ए तह़रीर से बाहर हैं जिस के कल्मात में फ़ैज़ाने कुन फ़ यकून मौजूद है जो शख़्स इस दुआ़ को आयतुल्कुर्सी पढ़ने के बाद पढेगा वह मुस्तजाबुद्दअ़वात हो जाएगा उसे उसके जुम्ला मअ़मूलात बिलखुसूस़ इस दुआ़ का फ़ैज़ बेह़िसाब अन्दाज़ में मिलेगा यह दुआ़ ह़ल्लुलमुश्किलात, मुसब्बेबुल अस्बाब, दाफ़िउ़ल बलीयात, शाफ़ियुल अम्राज़ और ग़ाफ़िरुल ख़त़ीआत के ख़ज़ाने से लबरेज़ है इस को पढ़ने वाला शैत़ान मर्दूद और नफ़्स के जुम्ला शरों से मह़फ़ूज़ रहेगा जाँ कनी के वक़्त वह शैत़ान मर्दूद के सारे ह़म्लों से मह़फ़ूज़ होगा सलामतिये ईमान के साथ उसका ख़ातेमा होगा क़ब्र की जुम्ला मुश्किलात से

वह महफ़ूज़ रहेगा और महशर में अल्लाह उसे अपने और अपने हबीब ﷺ के मक़ामे रेज़ा में शामिल फ़रमाएगा उसके चेहरे पर इस दुआ की बरकात का इस क़दर नूर होगा कि महशर के लोग उस की नूरानी सूरत से हैरान रहेंगे, आसमान व ज़मीन के सारे फ़िरिशते उस से मानूस होजाएंगे, हासिल यह कि यह दुआ जुम्ला रूहानी फ़ैज़ान व क़ल्बी अनवार का मख़्ज़न है जो शख़्स गोशए तन्हाई में रोज़ाना इस किताब को पढ़ेगा उस को ऐसी लाज़वाल नेअमत मिलेगी जो कभी उस के वहमो गुमान में भी न होगा उसे औलियाए केराम से शर्फ़े मुलाक़ात और उनके रूहानी फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल होने का शरफ़ हासिल होगा बक़्या फ़ुयूज़ो बरकात मुशाहदे से मुतअल्लिक़ हैं जो पढ़ने वाले पर उनके मरातिब के लिहाज़ से ज़ाहिर होंगे इन्शाअल्लाहु तआला,

व बिल्लाहित्तौफ़ीकु व हु व ख़ैरु रफ़ीक़िन वल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रहमतिल्लिल आलमीन व आलिहित्तय्यिबीन अज्मईन।

(1)

रूहानी ज़िक्रे ईद मीलादुन्नबी ﷺ

बिस्मिल्लाहि जलीलिश्शानि अ़ज़ीमिलबुर्हानि
शदीदिस्सुल्त़ानि माशाअल्लाहु का न
अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

बिस्मिल्लाहि व ल कल ह़म्दु व ल कश्शुक्रु अर्रह़मानिर्रह़ीमि बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला सय्यिदिना हु व मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि ﷺ अल्ह़मदुलिल्लाहिल क़दीमिद्दाइ मिलवाह़िदिल अ ह़ दिस़्समदिल फ़ र दिल माजिदिल ह़मीदिल ख़ालिक़िल बारिइल मुस़व्विरिल क़ादिरिल्लज़ी ला तुह़ीतु बिहिल अफ़्कारु वला तन्तही इलैहिल अस्रारु वला तुदरिक्हुल अब्सारु इलाही इन्न क अन्तल बसीरुस्समीउ़ल मुबदिउर्रह़मा नुर्रह़ीमुल्लज़ी अमरुहू इज़ा अरा द शैअन अँय्यकू ल लहू कुन

फ़ य कूनु ल कल ह़म्दु व लकश्शुक्रु फ़िल अव्वलि वल आख़िरि वज़्ज़ाहिरि वल बाति़नि ल क़द अज़्हर त मिन्नूरि क ह़बीबि क इज़्लम य कुन शैऊँ वला अम्रुन इल्ला अन्त कमा कुल्त फ़िल्ह़दीसिल कुदसिय्यि कुन्तु कन्ज़म मख़फ़िय्यन फ़ अह़ बब्तु अन ओअ़ र फ़ फ़ ख़लक़्तु ख़ल्क़न फ़अ़र्रफ़तुहुम बी फ़ अ़ र फ़ूनी व क़ा ल नूरुकल मह़ब्बतु अव्वलु मा ख़ ल क़ल्लाहु नूरी व कुल्लुल ख़लाइक़ि मिन्नूरी फ़ अज़्हर त नू र कल मह़ब्ब त मिन्नूरि ज़ातिकल क़दीमि वद्दाइमि फ़ का न आ़रिफ़न अव्वलम बिज़ातिकल क़दीमति वद्दाइमति व क़ा ल लाइला ह इल्लल्लाहु फ़ अन्अ़म त अ़लैहि कुल्लल मवाहिबि वल अ़ता़या व अक रम तहू बिनिअ़ मतिकल अ ज़लिय्यति वल अ बदिय्यति व शर्रफ़ तहू बिकुर बिकल ख़ास़्सि़ व मज्जत्तहू बिमज्दि कद्दाइमि वल क़ाइमि व नव्वर तहू बि जमीइ़ अनवारि ज़ाति क व सि़फ़ाति क व कुल्त लहू मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि ﷺ इलाही अन्त ख़ालिकु कुल्लि शैइन फ़ ख़लक़्त

मिन्नूरिकल मह़ब्बतिल अ़र्श वल कुर्सिय्य वल्लौ ह़ वल क़ ल म वल मलाइक त वल जन्न त वन्ना र वस्समावाति वल अर द़ वश्शम स वल क़ म र वल जिन्न वल इन्स व जमीअ़ल मौजूदाति व जअ़ल्तहू अस्ल कुल्लिल आ़लमि कमा कुल्त लौला क लमा ख़लक्तुल्ख़ल्क़ वल्लाहि सुब्ह़ान क अल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल्ह़य्युलक़य्यूमु ला तअ खुज़ुहू सि नतूँ वला नौमुल्लहू माफ़िस्समावाति व मा फ़िल अरद़ि मन ज़ल्लज़ी यश फ़उ इ़न्दहू इल्ला बिइज़्निही यअ़ लमु मा बै न ऐदीहिम वमा ख़ल्फ़हुम वला युह़ीतू न बिशैइम्मिन इ़ल्मिही इल्ला बिमा शा अ व सि अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर द़ वला यऊदुहू ह़िफ़्ज़ुहुमा व हुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीमु फ़ अअ़ लै तहू बिनूरि ज़ातिकल क़दीमति व सिफ़ातिकद्दाइमति वफ़द्द़ल्तहू अ़ला कुल्लिल मौजूदाति व ख़स्स़स तहू बिल वसीलतिल उ़ज़्मा व ज मअ़ त लहू जवामिअ़ल कलिमि व जवाहिरल ह़िकमि व अनल्त हुल ग़ायतल क़ुस्वा

व र फ़अ़ तहू बिरिफ़्अ़ति क व कुल्त व र फ़अ़ना ल क ज़िक र क व अअ़ तैतहू ख़िल्अ़ त रिदा़इ क मिन इ़न्दि क कमा कुल्त व ल सौ फ़ युअ़ती क रब्बु क फ़ तरदा़ व ज अ़ल्तहू शफ़ीअ़ल उम्मति व रह़मतल्लिल आ़लमीन व क तब्त इस्महू अ़ला साकि़ल अ़र्शि म अ़ इस्मिकल करीमि लाइला ह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि ﷺ व शर्रफ़ त बिइस्मिहिल अ़र्श वल कुर्सी य व हूरल जन्नति व जमीअ़ल काइनाति इलाही अन्तल्लाहुल्लज़ी अ ह़दुन स़ म दुल्लम य लिद व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अ ह़ दुन अन्त नूरुँ व ज अ़ल्त ह़बीब क नूरस्समावाति वल अरदि़ फ़ ख़लक़्त आद म मिन्नूरिकल मह़ब्बति व अदख़ल्त नूरकल मह़ब्बतल्लज़ी कुल्त फ़ीहि व कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि फ़ी ज स दि आद म फ़ तक़र्र र बिही रुहुहू व नव्वर्त बिनूरिही जबी न आद म फ़ कानल मलाइकतु यजूरूनहू मुस़ल्लियी न व मुसल्लिमीन मुतअद्दिबी न व क़द अदख़ल्त आद म फ़िल

जन्नति व अज़्हर त ह़व्वाअ मिन आद म व तज़व्वज्तहू म अ़ ह़व्वा अ फ़िल जन्नति व ज अ़ल्तस़्स़ला त वस्सला म बै न हुमल्म्ह र व शहित्त बिही व शहिदत मलाइकतु क व कुल त लहुमा या आदमुस्कुन अन्त व ज़ौ जु कल जन्न त व कुला मिनहा र ग़ दन हैसु शिअतुमा फ़ अहबत्तहुमल अर द़ लिविलादति नूरिकल मह़ब्बति फ़ हु वन्नूरु जा अ मिन आद म व शी स व महलाई ल व नूह़िन इला इब्राही म व बअ़ दहू इस्माईला नस्लम्बअ़ द नस्लिन सुम्म जा अ नूरुकल मह़ब्बतु इलस्सय्यिदि हाशिमिवँ वस्सय्यिदि अ़ब्दिल मुत्त़लिबि व बअ़दहू अ़ब्दिकस़्स़ालिहि़ल आ़बिदिज़्ज़ाहिदिल मुत्तक़ी यिल अ़फ़ीफ़िस्सय्यिदि अ़ब्दिल्लाहिब्नि अ़ब्दिलमुत्त़लिबि रद़ियल्लाहु अ़न्हु क़रनम्बअ़ द क़रनिम्मिनल अस़्लाबित्त़ाहिरति इलल अरह़ामित्त़य्यिबति व शर्र फ़ नूरुकल मह़ब्बतु कुल्लहुम बिफ़ैदि़ अनवारि ह़म्दिही व शुक्रिही व अल म अ़ हुम व अक र म हुम व अअ़ ला हुम बिरह़मतिही व क रमिही व

फ़दलिही सुम्म औदअ़ त मालिकल कौनैनि व ऐ न ह़यातिद्दारैनि व स़ाह़िबस्सक़लैनि व नबिय्यल बह़रैनि व नूरकल अज़ली य व नूरकल अबदी य व नूरकल क़दी म व नूरकद्दाइ म व नूरकल क़ाइ म व नूरकज़्ज़ा त व नूरकस़्सिफ़ा ति व नूरकल मह़ब्ब त इलस्सई दतित़्ताहि रतित़्त़य्यि बतिश्शरी फ़तिलअ़फ़ी फ़तिलजमीलतिल मुअमि नतिस़्सालि ह़तिन्नबीलतिस सय्यिदति आमि न त बिन्ति वहबिन रदि़यल्लाहु अ़न्हा इलाही इन्न क अ़ला कुल्लि शैइन शहीदुन कमा कुल्त व कुन्तु अ़लैहिम शहीदम्मा दुम्त फ़ीहिम व क़द ज अ़ल्त नूरकल मह़ब्ब त शहीदन कमा कुल्त व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम शहीदन इन्ना अरसल्ना क शाहिदम्मुबश्शिरवँ व नज़ीरवँ व दाइ़यन इलल्लाहि बिइ़ज़्निही व सिराजम्मुनीरवँ व अअ़ त़ै तहू कुल्ल सिफ़तिकल अ़त़ाइ व कुल्त इन्ना अअ़त़ैनाकल कौस र फ़लम्मा औदअ़ त नूरकल मह़ब्ब त इला बत़्लिस्सय्यिदति आमिन त व ज़ा लि क नूरुकल मह़ब्बतु स क न फ़ि बत़्लि

उम्मिहि तिस अ़ त अश्हुरिन फ़ लम्मा जा अशहरुल अव्वलु लिविलादति नूरिकल मह़ब्बति अ ताहस्सय्यिदु आदमु स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बति सय्यिदिलमुर्सली न व फ़िश्शहरिस्सानी अता हस्सय्यिदु शीसु स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बति इमामिल मुर्सलीन व जा अ हस्सय्यिदु नूहून फ़िश्शहरिस्सालिसि स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बतिन्नबिय्यिल करीमि व फ़िश्शहरिर्राबिइ़ अता हस्सय्यिदु इदरीसु स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बतिन्नबिय्यिल अ़फ़ीफ़ि व जा अ हस्सय्यिदु हूदुन फ़िश्शहरिलख़ामिसि स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बति सय्यिदिल बशरि सुम्म अता हस्सय्यिदु इबराहीमु फ़िश्शहरिस्सादिसि स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल

मह़ब्बतिन्नबिय्यिल हाशिमिय्यि सुम्म जा अ हस्सय्यिदु इस्माईलु फ़िश्शहरिस्साबिइ स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बति ह़बीबि रब्बिल आ़लमी न व अता हस्सय्यिदु मूसा फ़िश्शहरिस्सामिनि स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिनूरिकल मह़ब्बति ख़ातमिन्नबीयी न सुम्म जा अ हस्सय्यिदु ईसा फ़िश्शहरित्तासिइ स़ल्ला व सल्ल म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति व बश्शरहा बिइस्मि नूरिकल मह़ब्बति अह़म द ﷺ फ़ लम्मा वुलि द नूरुकल मह़ब्बतु क श फ़ तिल हुजुबु अ़न ब स़ रि उम्मिही व उबस़िरत तिल्कस्साअ़ त मशारिक़ुल अरद़ि व मग़ारिबुहा व र अत सलास त अअ़लामिम्मद़ रूबातिन अ़ लमन फ़िल मशरिक़ि व अ़ लमन फ़िलमग़रिबि व अ़ लमन अ़ला ज़हरिल कअ़बति व इज़ न ज़ रत इला नूरिकल मह़ब्बति फ़ हु व कुल्लुन्नूरि व नूरुन अ़ला नूरिवँ व हु व य त बस्समु व रीहुहू यस्तउ़ मिन ज सदिहित्ताहिरि सुम्म व द़ अ़

अ़लल्अरदि़ मुअ़ तमिदन अ़ला यदैहि व अ ख़ ज़ कुब द़ तम्मिनतुराबिवँ व र फ़ अ रअसहू इलस्समाइ व क़ा ल अव्वलन कलिमतम बिलिसानिन फ़सीह़िन अल्लाहु अकबरु कबीरवँ वल ह़म्दु लिल्लाहि ह़म्दन कसीरन सुब्ह़ानल्लाहि बुक्रतवँ व असीलन सुम्म स ज द व क़ा ल राफ़िअ़स्सब्बाब त मिंय्यमीनिही इलस्समाइ ला इला ह इल्लल्लाहु व इन्नी रसूलुल्लाहि सुम्म क़ा ल रब्बि हब्ली उम्मती व कानल ख़ातमु मिनन्नुबुव्वति बै न कत फ़ैहि तह़ारुबिही अब्सारुन्नाज़िरी न व का न कुति ब अ़लैहि बिल ख़त्तिन्नूरिय्यि ला इला ह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि ﷺव हु व यकूलु अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाहु व अन्नी रसूलुल्लाहि सुब्ह़ानल्लाहि वल ह़म्दुलिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु इलाही अन्त निअ़मल मौला व निअ़मन्नसीरु व बिकत्तौफ़ीकु व अन्त ख़ैरु रफ़ीकिन इज़ वु लि द नूरुकल मह़ब्बतु का न तजावबन्दिदाउ वस्सौ तु बिस्सलाति वत्तसलीमि

वत्तरही़बि मिन कुल्लि अक्नाफ़िल आ़ल मि व अन ह़ाइल काइनि फ़ लिज़ा कुल्त फ़ी अ़ ज़ म ति नूरिकल मह़ब्बति इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युस़ल्लू न अ़लन्नबिय्यि या अय्युहल्लज़ी न आ मनू स़ल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तसलीमन ।

(2)

सलामे मोह़म्मदी ﷺ

चहल मीम ग़ैर मन्कूत़ (13)

मअ़स्मिल्लाहिल मालिकिस्सलामि अल्लाहुम्म ल कल्ह़म्दुद्दाइमु ला इलाह इल्लल्लाहु स़ल्लि व सल्लिम कामिलम्मुक्रिमन अ़ला मौलाई कमालि क इस्मुहू मह़मूदूँ व मुत़हहिरिवँ वमुल्हिमिवँ व अम्रि क व मस्रूरि क व अस़्लिल्मलाइ कि वल्लौह़ि व मस्तूरिही वल्कुर्सीयि व वुस्इ़ही व मुह़ामिद कल औला ला इलाह इल्लल्लाहु व हु व कलामुकल उद्दु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि व स़ा र वालिदुहू अस़्लह़ल वालिदि व उम्मुहू अस़्लह़ल उम्मि व आलुहू अस़्लह़ल आलि व अ़ला वालिदिही व

उम्मिही व आलिही वल मौला अ़लिय्यिवँ व वलदै अ़लिय्यिवँ व उम्मिहिमा व मुह़यिल इस्लामि व आलिही व वालियिल इस्लामि व आलिही व अह़ म द व लिय्यिल्लाहि व ह़वारिय्यि वलिय्यिल्लाहि व आलिही व कुल्लि उममि रसूलिल्लाहि अ़ द द आलाइल्लाहि कुल्लल ह़ालि।

(3)

दुआ़ए अस्रारे क़ल्बी

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

बिह़म्दिही व बिशुक्रिही व बिही नस्तई़नु

अल्लाहुम्म इन्नी अस अ लु क अन तअ ख़ु ज़ ना बिलुत़्फ़ क व बिख़िल क़ति नूरिकल मह़ब्बति व बिविलादति नूरिकल मह़ब्बति अल्लाहुम्म इन्नी आमन्तु बि क व बिह़बीबि क व बिमा अन्ज़ल्त अ़ला ह़बीबि क व बिमा अन्ज़ल्त मिन क़ब्लु व बिअस्रारि अलिफ़ लाम मीम ज़ाहिरवँ व बात़िनम्मा तअ़ ल मु व मा यअ़ ल मु ह़बीबु क अल्लाहुम्म वफ़्फ़िक़्ना

अन्नअ़बु द क व ह़बीबु क मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि वर्जुक़ना अन्नुह़िब्ब ह़बीब क वस्तफ़िद़ सि न तना व नौमना बि फ़ैदि़ सि नति औलियाइ क व नौमि औलियाइ क व कस्सिर लना निअ़ मतम्मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अरदि़ वग़निना अ़म्मन सिवा क व वफ़्फ़िक़ना इता अ़ त ह़बीबि क वग़रिक़ ज स द ना व मा बै न यदैहि वमा ख़ल्फ़हू बि क र मिकल अ़ज़ीमि वज्अ़ल्ना अहलवँ वलाइक़म बिल इ़ल्मि वल ह़िक्मति व अद ख़िल्ना फ़ी ह़िज़्बिल्लज़ी न गु रि कू फ़ी मह़ब्बति क मिनस्समावाति वल अरदि़ वला यऊदुहू ह़िफ़्ज़ुहुमा व अय्यिदना बि मह़ब्बति क व मग़फ़ि रति क व रह़ मति क व अन्तल अ़लिय्युल अ़ज़ीमु फ़ वफ़्फ़िक़ना अन्नह़ म द क व नुस़ल्लि य व नुसल्लि म अ़ला नूरिकल मह़ब्बति बिल ख़ुलूसि़ वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमी न व स़ल्लल्लाहु अ़ला रह़ म तिल्लिलआ़लमी न मुह़म्मदिवँ व आलिही व अस़्ह़ाबिही अज्मई़न।

(1) तर्जमा

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बुज़ुर्ग शान वाला अ़ज़ीम दलील वाला ज़बर्दस्त बादशाहत वाला है, अल्लाह जो चाहता है वही होता है, मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ धुतकारे हुए शैत़ान से, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और तमाम तअ़रीफ़ तमाम शुक्र तेरे ही लिए है, बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और ख़ूब सलामती नाज़िल हो हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं,

तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए है जो क़दीमी दएमी ज़ात वाला है तन्हा है यक्ता है बेनियाज़ है अकेला है बुज़ुर्गी वाला है तअ़रीफ़ किया हुवा है ख़ालिक़ है बनाने वाला है सूरत गरी फ़रमाने वाला है क़ुदरत वाला है फिक्रें उसका एह़ाता नहीं कर सकतीं उस तक अस्रार ख़त्म नहीं होते आँखें उसका इदराक नहीं कर सकतीं, ऐ मअ़बूद बेशक तूही देखने वाला है सुनने वाला है ख़ल्क़ की इब्तेदा फ़रमाने वाला है, बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है, वह वही है जिसका अम्र है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो उस से सिर्फ़ कहता है हो जा पस वह हो जाती है,तेरे ही लिए तमाम तअ़रीफ़ है तेरे ही

लिए तमाम शुक्र है अव्वल में आख़िर में ज़ाहिर में बातिन में,बेशक तूने अपने नूर से अपने हबीब को उस वक़्त ज़ाहिर फ़रमाया जब कुछ न था न कोई अम्र था सिर्फ़ तूही तू था जैसा कि तु ने हदीसे कुदसी में फ़रमाया, मैं एक पोशीदह ख़ज़ाना था पस मैं ने चाहा कि मैं पहचाना जाऊँ तो मैं ने ख़ल्क़ को ज़ाहिर किया पस मैं ने उन्हें अपनी ज़ात से आश्ना किया तो वह मुझ से आश्ना हो गए और तेरे नूरे मोहब्बत ने फ़रमाया अल्लाह ने सब से पहले मेरे नूर को ज़ाहिर फ़रमाया और सारी ख़िल्क़तें मेरे नूर से हैं पस तू ने अपने नूरे मोहब्बत को अपनी ज़ाती क़दीमी नूर से ज़ाहिर फ़रमाया तो वह तेरी क़दीमी व दाइमी ज़ात के अव्वल आरिफ़ हुए और कहा लाइला ह इल्लल्लाहु तो तू ने उन पर तमाम नवाज़िशों और अतीयात का इन्आम फ़रमाया और तूने उन्हें अपनी अज़्ली व अब्दी नेअमत से मुकर्रम फ़रमाया और तूने उन्हें अपने कुर्बे ख़ास से मुशर्रफ़ फ़रमाया और तूने उन्हें अपनी दाइमी व क़ाइमी बुज़ुर्गी से बुज़ुर्ग बनाया, और तूने उन्हें अपनी तमाम ज़ाती व सिफ़ाती अनवार से मुनव्वर फ़रमाया और उनसे फ़रमाया, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि, ﷺ ऐ मेरे मअबूद तू हर चीज़ का ख़ालिक़ है तूने अपने नूरे मोहब्बत से ज़ाहिर फ़रमाया अर्श, कुर्सी, लौहो क़लम, फ़िरिश्ते, जन्नत, दोज़ख़ ,आसमान, ज़मीन,सूरज, चाँद,जिन्नात, इन्सान

और तमाम मौजूदात को, और बनाया तूने उन्हें सारे जहान की अस्ल जैसा कि तूने फ़रमाया (ऐ हबीब ﷺ)अगर आप न होते तो मैं ख़ल्क़ की तख़्लीक़ न फ़रमाता, अल्लाह की क़सम तेरी ही पाकी उस के सिवा कोई इबादत के लाएक़ नहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है दोसरों को क़ाएम रखने वाला है न उस को ओंघ आती है और न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है कौन है जो उस के हुज़ूर उसके हुक्म के बेग़ैर सिफ़ारिश कर सके वह जानता है जो कुछ उन के आगे और जो कुछ उनके पीछे है और वह एहाता नहीं कर सकते उस की मअलुमात में से मगर वह जिस क़दर चाहे, उस की कर्सी तमाम आसमानों और ज़मीन को मुहीत है और उसे उनकी निगरानी भारी नहीं वही सबसे बुलन्द रुत्बा बड़ी अज़मत वाला है, पस तूने उन्हें अपनी ज़ाते क़दीमी और सिफ़ाते दाइमी से बुलन्द फ़रमाया और उन्हें फ़ज़ीलत बख़्शी तमाम मौजूदात पर और उन्हें ख़ास फ़रमाया अज़ीम मर्तबए वसीला के साथ, जमअ किया तूने उनके वास्ते मअना खेज़ कलमात और हिक्मतों के जवाहेर और पहुँचाया तूने उन्हें निहायत अअला मर्तबा को और बुलन्दी दी तूने उन्हें अपनी बुलन्दी के साथ और फ़रमाया तुने और हमने बुलन्द किया आप के लिए आप के ज़िक्र को और तुने उन्हें अता किया अपनी रेज़ा की ख़िल्अत अपनी बारगाह से

जैसा कि फ़रमाया तूने अ़न्क़रीब अ़ता करेगा आप को आप का रब पस आप राज़ी हो जाएंगे और बनाया तूने उन्हें शफ़ीए़ उम्मत और सारे जहान के लिए रह़मत, और तूने उनके इस्मे पाक को अ़र्श के पाए पर लिखा अपने इस्मे करीम "लाइला ह इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहिﷺ"के साथ और तूने उनके इस्मे पाक की बरकत से मुशर्रफ़ फ़रमाया अ़र्श, कुर्सी, हूराने जन्नत और तमाम काएनात को, ऐ मेरे मअ़बूद तू अल्लाह है कि वह यक्ता है बेनियाज़ है वह किसी से पैदा नहीं उसकी कोई औलाद नहीं और कोई उसके बराबर नहीं, तू नूर है और तूने अपने ह़बीब को आसमानो ज़मीन का नूर बनाया पस तूने आदम को अपने नूरे मोह़ब्बत से ज़ाहिर फ़रमाया और तूने अपने उस मोहब्बत के नूर को आदम के जिस्मे पाक में दाख़िल फ़रमाया जिसके बारे में तूने फ़रमाया और अल्लाह गवाही के तौ़र पे काफ़ी है कि मोह़म्मदﷺअल्लाह के रसूल हैं पस उस नूर की बरकत से आदम की रूह़ को क़रार ह़ासिल हुवा,और तूने अपने उस नूरे मोह़ब्बत से आदम की पेशानी को मुनव्वर फ़रमाया तो फ़िरिश्ते दुरूदो सलाम पढ़ते हुए अदब के साथ उसकी ज़ियारत करते थे और तूने आदम को जन्नत में दाख़िल फ़रमाया फिर बीबी ह़व्वा को आदम से ज़ाहिर फ़रमाया और उनका निकाह़ जन्नत में ह़व्वा के साथ कर दिया और उनके माबैन दुरूदो

सलाम को महर रखा जिस पर तू गवाह हुवा और तेरे फ़िरिश्ते गवाह हुए, तूने उनसे फ़रमाया ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से जो चाहो खाओ फिर तूने उन्हें अपने नूरे मोहब्बत की विलादत के लिए ज़मीन पर उतारा,फिर वह नूर सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम व शीस व महलाईल और नूह़ अ़लैहिमुस्सलाम से हो कर सय्यिदुना इब्राहीम फिर सय्यिदुना इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम के पास नस्लन बअ़ द नस्लिन आया फिर तेरा नूरे मोहब्बत सय्यिद हाशिम, सय्यिद अ़ब्दुल मुत्तलिब के पास क़र्नन बअ़ द क़र्निन पाक पुश्तों से पाक रह़मों तक होकर तेरे नेक बन्दे आ़बिद ज़ाहिद मोमिन मुत्तक़ी पारसा सिफ़त सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रदि़यल्लाहु अ़न्हु के पास आया, तेरे नूरे मोहब्बत ने इन सब को अपने ह़म्दो शुक्र के अनवार से मुशर्रफ़ फ़रमाया उन्हें चमकाया, बा करामत बनाया और उन्हें बुलन्दी अ़ता की अपनी रह़मत अपने करम और फ़ज़्ल से, फिर तूने दोनों जहान के मालिक दोनों जहान की जान जिन्नो इन्स के आक़ा, खुश्को तर के नबी, अपने नूरे अज़्ली व अब्दी अपने नूरे क़दीमी, दाइमी व क़ाइमी अपने नूरे ज़ात व सिफ़ात और अपने नूरे मोहब्बत को सब से ज़्यादा नेक बख़्त, पाकीज़ा, साफ़ सुथरी ज़ात, निहायत शरीफ़, पाक दामन, साह़ेबे जमाल , ईमानदार, नेक सिफ़त उ़म्दह

ख़स्लत वाली सय्यिदह बीबी आमिना बिन्ते वहब रदि़यल्लाहु अ़न्हा के सुपुर्द फ़रमाया, ऐ मेरे मअ़बूद बेशक तू हर चीज़ पर गवाह है जैसा कि तूने फ़रमाया मैं इन पर गवाह हूँ जब तक आप इन में हैं, बेशक हमने आप को ह़ाज़िर व नाज़िर बशारत देने वाला डर सुनाने वाला अल्लाह की त़रफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाला और चमकता दमकता चराग़ बना कर भेजा है तूने उन्हें अपनी सिफ़ते अ़त़ा, अ़त़ा फ़रमाई तूने फ़रमाया (ऐ ह़बीब ﷺ) बेशक हमने आप को कौसर(ख़ैरे कसीर) अ़त़ा फ़रमाया, फिर जब तूने अपने नूरे मोह़ब्बत को सय्यिदा आमिना के ब़त्ने अक़्दस में तफ़्वीज़ फ़रमाया तो वह नूरे मोह़ब्बत अपनी वालिदह के ब़त्ने पाक में नौ महिना तशरीफ़ फ़रमा रहा पस जब तेरे नूरे मोह़ब्बत की विलादत का पहला महीना आया तो सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम बीबी आमिना के पास आए तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश किया और उन्हें तेरे नूरे मोह़ब्बत सय्यिदुलमुर्सलीन की बशारत दी दोसरे महीना में सय्यिदुना शीस अ़लैहिस्सलाम आए तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश किया और उन्हें तेरे नूरे मोह़ब्बत इमामुल मुर्सलीन की बशारत दी जब तीसरा महीना आया तो सय्यिदुना नूह़ अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश किया और उन्हें तेरे नूरे मोह़ब्बत नबी करीम की बशारत सुनाई चौथे महीने में

सय्यिदुना इद्रीस अ़लैहिस्सलाम बीबी आमिना के पास आकर तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश किया और उन्हें तेरे नूरे मोह़ब्बत पाक दामन वाले नबी की बशारत दी पाँचवें महीना में सय्यिदुना हूद अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश कर के बीबी आमिना को तेरे नूरे मोह़ब्बत सय्यिदुल बशर की बशारत सुनाई, फिर सय्यिदुना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम छट्टे महीना में आए तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश किया फिर बीबी अमिना को तेरे नूरे मोह़ब्बत ह़बीबे रब्बुल आ़लमीन की बशारत अ़ता की, आठवें महीना में सय्यिदुना मूसा अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश कर के उन्हें तेरे नूरे मोह़ब्बत ख़ातेमुन्नबीयीन की बशारत दी, फिर सय्यिदुना ईसा अ़लैहिस्सलाम नवें महीना में बीबी आमिना के पास तशरीफ़ लाए और तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम पेश किया और बीबी आमिना को तेरे नूरे मोह़ब्बत के इस्मे पाक अह़मद ﷺ के साथ बशारत सुनाई, पस जब तेरे नूरे मोह़ब्बत की विलादते पाक हुई तो बीबी आमिना की आँखों से ह़िजाबात उठ गए और उस वक़्त उन्हें मशरिक़ व मग़रिब का मुशाहदा कराया गया बीबी आमिना ने तीन नस़ब शुदह झन्डे देखे एक मशरिक़ में एक मग़रिब में और एक झन्डा कअ़बा की छत पर जिस वक़्त बीबी आमिना ने तेरे नूरे मोह़ब्बत को देखा

तो आप सरापा नूर बल्कि नूरुन अ़ला नूरिन थे आप मुस्कुरा रहे थे आप के जिस्मे पाक से खुशबू निकल रही थी फिर आप ने ज़मीन पर अपने दोनों हाथों का सहारा लिए हुए मिट्टी से अपनी मुठ्ठी को भरा और अपने सरे अक़्दस को आसमान की त़रफ़ बुलन्द फ़रमाया और आपने सब से पहला कल्मा ब ज़बाने फ़सीह़ यह फ़रमाया, अल्लाह सब से बड़ा है तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह ही के लिए पाकी है हर सुब्ह़ो शाम, फिर आपने सिज्दा किया और अपनी अंगुश्ते शहादत आसमान की त़रफ़ बुलन्द फ़रमा कर फ़रमाया अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ फिर आप ने फ़रमाया ऐ मेरे पालन हार तू मेरी उम्मत को मुझे हिबा फ़रमा दे और मुहरे नुबूवत आप के दोनों शानों के दर्मियान थी जिस से देखने वालों की आँखें ख़ीरह हो जाती थीं उस पर नूरानी ख़त़ से लाइला ह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि ﷺ लिखा हुवा था और आप फ़रमा रहे थे मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ, अल्लाह पाक है तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है ऐ मेरे मअ़बूद तू बेहतर मौला है बेहतर मददगार है तेरी ही जानिब से तौफ़ीक़ है और तूही बेहतर साथी है,जब तेरे नूरे मोह़ब्बत की विलादते बा

सआ़दत हुई तो हर आ़लम के चारों त़रफ़ से दुरूदो सलाम मर्ह़बा मर्ह़बा ख़ुश आम्देद की स़दाएं और अवाज़ें बुलन्द हो रही थीं इसी लिए तूने अपने नूरे मोह़ब्बत की अ़ज़मतो शान में फ़रमाया, बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते नबी पर दुरूदो सलाम भेजते हैं ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम भेजो ।

(2) मुराद

अल्लाह के इस्म के सहारे कि वही मालिक व सलामी वाला है। ऐ हमारे अल्लाह सारा दाइमी ह़म्द अल्लाह ही के लिए है, वाह़िद अल्लाह ही इलाह है कामिल इकराम वाला दुरूदो सलाम हमारे मौला अल्लाह के कमाल के लिए हो, कि उसका इस्म मह़मूद है और (दुरूदो सलाम) मुत़हहिर के लिए हो, इलहाम वाले के लिए हो, अल्लाह के अम्र के लिए हो, और अल्लाह के मस्रूर के लिए हो,मलाइका और लौह़ और उस के मस्त़ूर की अस़्ल के लिए हो, कुर्सी और उस से वस़्ल वाले की अस़्ल के लिए हो और अल्लाह की उ़म्दह ह़म्द ला इलाह इल्लल्लाहु वाले के लिए हो और वह अल्लाह का कलामे उद मोह़म्मद ﷺ अल्लाह का रसूल है और उस रसूल के वालिद स़ालेह़ हुए सारे वालिद से और माँ सारी माओं से और आलो औलाद सारे आलो

औलाद से और (दुरूदो सलाम) उस रसूल के वालिद के लिए हो और माँ के लिए हो और आल के लिए हो, मौला अ़ली के लिए हो, मौला अ़ली के लाडलों के लिए हो और मौला अ़ली के लाडलों की वालिदह के लिए हो, इस्लाम के मुह़यी के लिए हो और आल के लिए हो, इस्लाम के मददगार के लिए हो और आल के लिए हो और अह़मद वलीयुल्लाह के लिए हो और वलीयुल्लाह के हम दमों के लिए हो और आल के लिए हो, अल्लाह के रसूल की सारी उमम के लिए हो हर दम मअ़ अ़ददे अ़ताए इलाही के ।

तौज़ीह़ी तर्जमाः- अल्लाह के इस्म के साथ जो मालिक है सलामती देने वाला है ऐ हमारे अल्लाह तेरे ही लिए तमाम दाइमी तअ़रीफ़ है अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू भेज ख़ूब ख़ूब कामिल अ़ज़्मत वाला दुरूदो सलाम हमारे मौला अपने कमाल पर कि जिनका इस्मे पाक "ख़ूब ख़ूब तअ़रीफ़ किया हुवा" है। (दुरूदो सलाम हो) ख़ूब सुथरा करने वाले पर और इल्हामे ह़क़ फ़रमाने वाले पर और तेरे अम्र पर और तेरी ख़ुश्नूदी पर और तमाम फ़रिश्तों, लौह़ और उस में लिखे हुए की अस्ल पर, कुर्सी और उस में समाए हुए की अस्ल पर और तेरी सब से बेहतर तअ़रीफ़ ला इलाह इल्लल्लाहु करने वाले

पर और वह तेरी मोहब्बत का कलाम मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं कि जिनके वालिद(सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह रदि़यल्लाहु अ़न्हु) तमाम वालिद में सब से ज़्यादा नेक हैं और जिनकी माँ (बी बी आमिना रदि़यल्लाहु अ़न्हा) तमाम माओं में सब से ज़्यादा नेक हैं और जिनकी आलो औलाद तमाम आलो औलाद में सब से ज़्यादा नेक हैं और (दुरूदो सलाम नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिद पर और आप ﷺ की वालिदह पर और आल पर, ह़ज़रत मौला अ़ली रदि़यल्लाहु अ़न्हु पर और मौला अ़ली के दोनों लाडलों इमामे ह़सन व इमामे हुसैन अ़लैहिमस्सलाम पर और ह़स्नैन करीमैन की वालिदह ख़ातूने जन्नत सय्यिदह बीबी फ़ातेमा ज़हरा रदि़यल्लाहु अ़न्हा पर और दीन के ज़िन्दा करने वाले मुह़युद्दीन सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदि़यल्लाहु अ़न्हु पर आप की आल पर और दीन के मददगार ख़्वाजा मोईनुद्दीन ह़सन सन्जरी पर आप की आल पर और ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह पर आप के अस्ह़ाबे रूह़ानी पर और आल पर, और अल्लाह के रसूल के सारे उम्मतियों पर हर दम नेअ़मते इलाही की तअ़दाद के मुत़ाबिक़।

(3) तर्जमा

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

उसी के ह़म्द और शुक्र से और हम उसी से मदद चाहते हैं।

ऐ हमारे अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि तू अपनी मेहरबानी के वास्ते से और अपने नूरे मोह़ब्बत की ख़िल्क़त व विलादत के वास्ते से हमारी मदद फ़रमा, ऐ हमारे अल्लाह मैं ईमान लाया तुझ पर और तेरे ह़बीब ﷺ पर और उस पर जो तूने अपने ह़बीब ﷺ पर उतारा और उस पर जो तूने इस से पहले उतारा (और सवाल करता हूँ) अलिफ़ लाम मीम के उस ज़ाहिरी और बाति़नी राज़ों के वास्ते से जो तू जानता है और तेरे ह़बीब ﷺ जानते हैं ऐ हमारे अल्लाह तू हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कि हम तेरी ही इ़बादत करें, और तेरे ह़बीब मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, तू हमें तौफ़ीक़ बख़्श कि हम तेरे ह़बीब ﷺ से मोह़ब्बत करें और तू हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है पस तू हमारे दिल को अपनी मोह़ब्बत और अपने ह़बीब ﷺ की मोह़ब्बत के साथ ज़िन्दा फ़रमा दे और तू क़ाएम फ़रमाने वाला है पस तू हमें अपनी और अपने ह़बीब ﷺ की रेज़ा के साथ

क़ाएम फ़रमा और तू हमारी ओंघ और हमारी नींद को अपने औलिया की ओंघ और नींद के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ फ़रमा और हमारे लिए उन तमाम नेअ़मतों को कसीर फ़रमा जो आसमानों और ज़मीन में हैं और तू हमें अपने मा सिवा से बेनियाज़ कर दे तू हमें अपने ह़बीबﷺकी पैरवी की तौफ़ीक़ बख़्श, हमारे जिस्म और जो कुछ उस के आगे और पीछे है अपने करमे अ़ज़ीम से ढ़ाँप ले और तू हमें इ़ल्मो ह़िक्मत के साथ अहल और लाएक़ बना दे और हमें उन लोगों के गिरोह में दाख़िल फ़रमा जो आसमानों और ज़मीन में से तेरी मोह़ब्बत में शराबोर हैं कि जिन की निगहबानी तुझे भारी नहीं, और तू हमारी निगरानी फ़रमा अपनी मोह़ब्बत अपनी बख़्शिश और रह़मत के साथ और तू ही बुलन्दी वाला अ़ज़मत वाला है पस तू हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कि हम ख़ुलूस़ के साथ तेरी ही ह़म्दो सना करें और तेरे नूरे मोह़ब्बत पर दुरूदो सलाम भेजें, और तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह केलिए है जो सारे जहान का पालनहार है और अल्लाह दुरूद नाज़िल फ़रमाए सारे जहान की रह़मत मोह़म्मदﷺ पर और आपﷺकी आल पर और तमाम अस़्ह़ाब पर।

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com